आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902
डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 02 | उदयपुर शुक्रवार 01 फरवरी 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

भूलती बिसरती कलात्मक सौंदर्य रंजनी घास से जुड़ी प्रजातियां

-डॉ. मालती शर्मा-

दूब, घास इस धरती पर जीवनांकुर का प्रतीक है और अमरता का भी। समुद्र मंथन से निकला अमृत-कलश जब गरुड़ लेकर उड़ा तो धरती पर पहली बूंद दूब पर पड़ी जिससे सतत वृद्धि का, फलने-फूलने का आशीर्वाद बनकर दूब अमर हो गई।

दूब भीषण गर्मी की चिलचिलाती धूप में सूखकर डंडी हो जाती है मगर मरती नहीं और वर्षा होने पर लहलहाती हुई पूरी धरती ढंक लेती है। गुरुनानक देव ने मनुष्य को सारा अहम् छोड़कर सबके पैरों तले रौंदी जाने वाली नन्ही दूब बनकर रहने का संदेश दिया है। जो सबकुछ सहकर भी बड़े-बड़े पेड़ों से रूं जाने पर भी खूब की खूब रहती है-

नानक नन्हे ही रहो जैसे नन्ही दूब।
और रूंख गिरि जाइंगे दूब खूब की खूब।।

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार हमारा पूरा कृषि विश्व धान गेहूं जौ ईख से लेकर डेढ़ सौ-दो सौ फीट की ऊंचाई वाले बांस तक घास प्रजाति का है। कृषि-संसार में घास से लेकर कांग्रेस ग्रास तक जितने रूप हैं उनकी गणना करना कठिन है पर लोकजीवन में घास प्रजाति के जितने धान्य दलहन और तिलहन हैं उनके अंखुए, अंकुर से तनों के फुनगी के बालों के रूपों के जितने नाम हैं उनसे बनी जीवनोपयोगी वस्तुएं, ग्रामीण बाल-बच्चों के गहने-गुरियों के खेल-खिलौनों का रमणीय और सार्थक ठाठबाट का आनंददायी लोक है। घास का ठीक से रखरखाव, देखभाल करने वाला घसियारा कहलाता है।

घासों में मूंज, कांस, डाभ, कुश और साकंडा विशेष घासें हैं जिनके धार्मिक और अनुष्ठानिक उपयोग भी हैं। मूंज और साकंडे की सिरकी से, सीकों से किसान के घर की बहुत सी उपयोगी, लुभावनी वस्तुएं बनती हैं। ब्रज में गेहूं जौ के तने 'नरई' कहे जाते हैं। धान का तना पियार अधिक प्रचलित नाम पुआल कहा जाता है। ज्वार, बाजरा और मक्का का तना करब कहलाता है और अरहर का तना लौद, लौदरी।

तिलहन सरसों दूंआ लाहा और तिल के तने संटी हैं जिनमें तिल होते हैं, वे घेंटा हैं। चना में घेघरा, बूट होते हैं। मराठी में हराभरा धान, गेहूं, जौ, बाजरा की बालें हैं ज्वार और मक्का के भुट्टा। मक्का के भुट्टे का अधिक लोक पारम्परिक नाम अड़िया और भुटिया है। सारी दलहन मूंग, मोंठ, उर्द, अरहर, रमास की फलियां हैं। मटर और ग्वार की भी फली है।

फसल कटने के बाद खेतों में कटे हुए ठूंठ और ठंठी रह जाती है और सारे अनाज निकाल लेने के बाद बचा अंश भूस, भूसा कहा जाता है। कहा भी है- भूस में लट्ठ मारने से कुछ नहीं निकलता। यों तो गांव का सारा जीवन घास की सभी प्रजातियों के ठाठबाट से ओतप्रोत है पर उनमें करब और सरकंडा के गिलंगे, अरहर की हरी लौद, मूंज की सिरकी सीकें, किसान के घर की उपयोगी वस्तुएं, बच्चों के खेल खिलौने और बालिकाओं के गहने गुरिया बना उन्हें कलात्मक साज-सिंगार और सुन्दर निखार देते हैं।

ब्रज की बालाएं करब और सरकंडे का गिलंगा छीलकर उससे लच्छे पायजेब बाजूबंद अंगूठी आदि गहने बनाती हैं। अपनी गुड़िया के लिए गिलंगे ओर उसकी चीपों से बुना संवारा पलंग पीढ़ा पंखा आदि वस्तुएं बनाती हुई गर्मी की लम्बी दोपहरियां किसी नीम तले बिताती हैं।

-शेष पृष्ठ सात पर

पोथीखाना

भरे-पूरे शानदार लोगों की यादें

'सम्बोधन' पत्रिका के सम्पादक तथा कथाकार कमर मेवाड़ी ने जीवन के विविध क्षेत्रों में नये आयाम तथा नव उपलब्धियां प्राप्त करते हुए समाज में प्रतिष्ठा कायम करने वाले व्यक्तियों की स्मृतियों को ताजा करते हुए अपने संस्मरणों को 'यादें' नामक संग्रह में प्रस्तुत किया है।

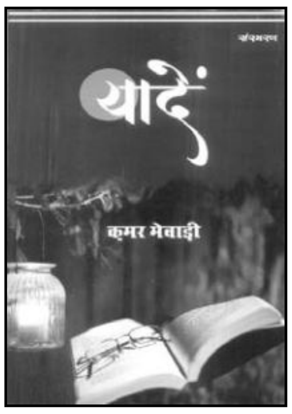

यह प्रयास दो कारणों से महत्वपूर्ण बन जाता है। पहला यह कि इससे लेखक की संवेदनशीलता, मार्मिकता, निर्भीकता तथा साफगोई का पता चलता है और दूसरा यह कि इससे बदलते दौर में संस्मरण विधा की आवश्यकता और अनिवार्यता दोनों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट होता है। इसके अलावा, इन संस्मरणों की भाषा की रवानी और अपनापन भी अलग से रेखांकित किया जा सकता है। विवेक सम्मत नजरिया बनाये रखते हुए भी किसी व्यक्तित्व की बारीकियों को सामने लाने का प्रयास इन रचनाओं की पठनीयता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होता है।

साहित्यिक क्षेत्र से जिन व्यक्तियों का यहां समावेश हुआ है उनमें नंद चतुर्वेदी, हरीश भादानी, मणि 'मधुकर', विष्णुचंद्र शर्मा, मनमोहन ठाकोर, आलमशाह खान, स्वयंप्रकाश, हेतु भारद्वाज इत्यादि से जुड़ी हुई स्मृतियों का आलेखन है जबकि सामाजिक, सार्वजनिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक क्षेत्रों से आने वाले निरंजननाथ आचार्य, आचार्य तुलसी, डॉ. महेन्द्र भानावत, मधुसूदन पांड्या, देवेन्द्र कर्णावट, कालेखां, शम्भूलाल शर्मा, हर्षलाल पगारिया, गेहरीलाल नंदवाना तथा आत्माराम सरीखे उन लोगों की आत्मीय स्मृतियों से अनुभव प्रकट हुए हैं, जिन्होंने लेखक के मनोमस्तिष्क पर व्यक्तिगत परिष्कार, विस्तार तथा आत्मपरक मूल्यांकन की दृष्टि से महत्वपूर्ण योगदान किया है।

ये तमाम संस्मरण कमोवेश कमर मेवाड़ी के उन व्यक्तिगत गुणों की ओर भी संकेत करते हैं जिन्हें हम कर्ज अदायगी तथा आभार-प्रदर्शन का पर्याय मान सकते हैं।

इन संस्मरणों के जरिये यह बात भी सामने आती है कि लेखक के परिचय तथा कार्यक्षेत्र का दायरा काफी विस्तृत है, और यह भी कि उसकी नजर अन्य व्यक्तियों की अन्तर्निहित संभावनाओं तथा क्षमताओं को रेखांकित करने में समर्थ है।

रचनाकार के जीवन संघर्षों का साक्षी बन कर जिन लोगों ने उसे सम्बल एवं हौंसला दिया, तथा इसे जिस कृतज्ञता तथा अपनापे के साथ लेखक ने यहां व्यक्त किया है, वह रोचक भी है, और गंभीर भी। प्रेरक भी है तथा विचारणीय भी है और ये तमाम चीजें एक साथ मौजूद होने को ही कमर मेवाड़ी की सृजनात्मक समृद्धि तथा बौद्धिक विस्तार का पर्याय माना जाना चाहिए।

संवाद शैली और वर्णनात्मक शैली दोनों ही लेखक के मंतव्य तथा गंतव्य को स्पष्ट करने में सफल है। सम्पादक तथा लेखक कमर मेवाड़ी ने इन दोनों ही भूमिकाओं में जो अनुभव-सघनता तथा अनुभव-सम्पन्नता प्राप्त की है, वह काफी हद तक उन व्यक्तित्वों की संगत का सुफल भी कही जा सकती है।

कुल मिलाकर इतना कहा जा सकता है कि कमर मेवाड़ी इन संस्मरणों के बहाने गाहे-बगाहे हमारी मानवीय कमजोरियों, खामियों और दोहरेपन को तो सामने लाते ही हैं लेकिन साथ ही साथ मनुष्य के रचनाकार व्यक्तित्व में मौजूद सकारात्मक, गुणात्मक, भावनात्मक, संवेदनात्मक तथा आत्मीय तत्वों को भी प्रकट करते हैं।

व्यक्तिगत संकीर्णताओं से ऊपर उठकर अपने को अन्य से जोड़ना जो आगे जाकर आपका आत्मीय बन जाता है, बेहद मुश्किल तथा जोखिम भरा काम बन जाता है।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि कमर मेवाड़ी अपनी यादों की इस यात्रा में संवेदनपरक भाषा, आत्मीय लगाव, खुलेपन के भाव तथा मानवीय गुण-ग्राहकता के आधार पर पाठक को प्रभावित भी करते हैं और इन रचनाओं में स्वाभाविक सम्प्रेषणीयता को संभव भी करते हैं। नीरज बुक सेन्टर, दिल्ली-91 से प्रकाशित 144 पृष्ठीय इस पुस्तक का मूल्य 395 रूपये है।

-डॉ. कुन्दन माली

चिर सहचरी, मृत्यु विषयक चिन्तन

प्रत्येक जीवधारी प्राणी के दो ही स्वरूप हैं- जीवन और मृत्यु। जीवन यदि उत्सव है तो मृत्यु महा उत्सव। जीवन के बाद व्यक्ति का आगमन होता है। मृत्यु के बाद उसका बहिर्गमन। जिस रूप में वह जीया उस रूप में उसकी उपस्थिति सदैव के लिए ओझल हो जाती है।

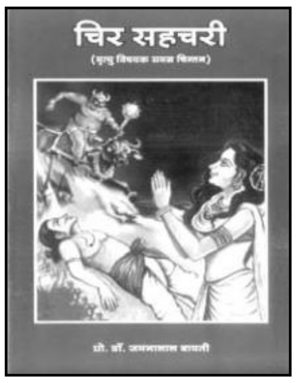

जीवन और मृत्यु के सम्बन्ध में अनेकानेक ग्रन्थों, विद्वानों, पंडितों, शास्त्रज्ञों और अनुभवियों ने जितना जो कुछ लिखा है वह चकित कर देने वाला है। उससे हम किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सकते बल्कि रहस्यों और चमत्कारों के कई बिम्ब खुलते, खिलते, बिगड़ते, बनते, बोझिल हुए लगते हैं। यह मुद्दा रहस्यमय ही रहेगा।

इस सम्बन्धी विविध और विभिन्न मान्यताओं का ही यह आलम है कि कोई किसी एक मत याकि धारणा स्थापित नहीं कर पाया जो सबके लिए मान्य स्वीकार्य हो। पढ़े-लिखे समाज के अलावा वह लोक जो सब कुछ अलिखित अथवा श्रुत किंवा कण्ठासीन ज्ञान से आश्रित आस्थावान बना हुआ है, उसकी भी मृत्यु के सम्बन्ध में अपनी आधारभूत धारणाएं हैं। वे आंखिन देखी, जीवन भोगी हैं, कागज लेखी नहीं।

ऐसे अनेक लोग दीर्घकालीन विविध प्रान्तीय भ्रमण यात्राओं में सम्पर्क में आये हैं जो अपनी दीर्घकालीन साधना से सूक्ष्म शरीरी हवा भाखी बने हुए हैं। उनमें मन चाहा कोई रूप धारण करने की शक्ति है। वे उन सब जगह मिल जायेंगे जहां-जहां बड़े-बड़े धार्मिक मेले आयोजित होते हैं। कुम्भ जैसे मेलों में ऐसी आत्माएं अनेक रूपों में देखने को मिलती हैं।

डॉ. जमनालाल बायती ने 'चिर सहचरी' नामक पुस्तक में मृत्यु विषयक उन अनेक बातों का जिक्र किया है जो यत्र-तत्र विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं और जिनके सम्बन्ध में विद्वानों ने लिखा है। इस दृष्टि से यह पुस्तक दो भागों में विभक्त है। भूमिका में देवर्षि कलानाथ शास्त्री का यह कथन द्रष्टव्य है-

'इस ग्रन्थ में मृत्यु पर चिन्तन तो है ही उसके विभिन्न आयामों पर लेख हैं। विभिन्न भाषाओं के दार्शनिकों, साहित्यकारों और विचारकों ने उस पर जो अभ्युक्तियां दी हैं उनके उदाहरण हैं। हमारे धर्मग्रन्थों, दार्शनिक ग्रन्थों, पुराणों, शास्त्रों आदि में उस पर जो विचार उपलब्ध हैं उनसे बचने के जो उपाय अपनाए जाते रहे हैं उनका संकलन है। इस दृष्टि से एक व्यापक आपातत: भीषण लगने वाले किन्तु अल्प परिज्ञात और अपेक्षाकृत साहित्य में अल्प चर्चित विषय पर प्रभूत सामग्री देने वाला यह ग्रन्थ सर्वथा नई जमीन तोड़ता है।'

प्रथम भाग में मृत्यु, जीव, कर्मफल, प्राणों का निष्कासन आदि पर विस्तृत विवेचन है। दूसरे भाग में मृत्यु, जीवन, रहस्य, मृत्युबोध, जीवन की महायात्रा, मृत्यु की आहट तथा मृत्यु विषयक सामाजिक मान्यताओं पर विद्वानों के विचार-आलेख दिये गए हैं। इस भाग का सम्पादन डॉ. कृष्णा माहेश्वरी ने किया है। लगभग सवा सौ पृष्ठ की यह सादी पुस्तक तुलसी मानस संस्थान 39, माथुर वैश्यनगर, टौंकरोड़, जयपुर से छपी है। इसका मूल्य 500 रूपया अधिकाधिक है। कहना चाहिए, इतना भारी भरकम मूल्य किसी किताब को महत्वपूर्ण नहीं बनाता और न पाठकों में पढ़ने की जिज्ञासा ही देता है।

-डॉ. तुक्तक भानावत

भारतीय इतिहास दृष्टि और सिन्धु दर्शन

भारत सदा ही संस्कृति के चरम विकास का केन्द्र रहा है। इसके निर्माण में नदियों का अत्यधिक योगदान है। इस दृष्टि से सिन्धु नदी का विशिष्ट महत्व है। सन् 1997 से सिन्धु यात्रा प्रति वर्ष लेह में सिन्धु के घाट पर आयोजित हो रही है।

लेखक छगनलाल बोहरा अपने परिवार व इष्ट मित्रों सहित लेह के आसपास के स्थानों की यात्रा करते हुए सिन्धु दर्शन के कार्यक्रम में सम्मिलित हुए थे।

उन्होंने हजारों वर्षों के इतिहास को बहुत ही सीमित पृष्ठों में समेटने का बहुत ही सफल प्रयास किया है। विवरण प्रभावशाली है। पाठकों के सम्मुख हजारों वर्षों की घटनाएं स्थान आदि जीवन्त हो जाते हैं। यह ऐसा वृतान्त है जिसमें इतिहास, संस्कृति, आध्यात्मिकता का सामन्जस्य मन व मस्तिष्क को झकझोरता है तथा कुछ कर गुजरने की प्रेरणा प्रदान करता है।

यह विवरण केवल प्रकृति एवं ऐतिहासिक घटनाओं तक ही सीमित न रह कर स्थानीय व्यक्तियों की जीवनशैली, उनकी मनोभावना एवं चिन्तन को भी सुन्दर शब्दों में चित्रित करता है। इस यात्रा के दौरान क्षेत्र में तैनात सैनिकों से मिलने के अवसर का भी लेखक ने लाभ उठाया है। टेक्सी चालक जेल्सिन की बातों में देशभक्ति की अटूट भावना चीन और पाकिस्तान के प्रति उसका रोष एक व्यक्ति का न होकर लद्दाख की समस्त जनता का लगा।

यह विवरण बहुत ही सहज है। लगा जैसे पाठक भी उनके साथ सहयात्री बना हुआ है। यथा- अत्यन्त व्यस्त और दुर्गम मार्ग से गुजरती हुई बस, एक तरफ ऊंचे पर्वत और दूसरी ओर हजारों फीट गहरी खाई में बहती हुई नदी, नीच की ओर देखने पर शरीर में झुरझुरी सी होने लगती है। पहाड़ी ढलानों पर बसे छोटे-छोटे गांव। रास्ते में सड़क पर पेड़ गिर जाने से एक स्थान पर वाहनों की लंबी कतार लग गई। जहां हमारी बस रूकी वहां पास ही ऊंचाई से झरना गिर रहा था।

सभी यात्रियों ने उतर कर झरने के पास शीतलता का अनुभव करते हुए फोटोग्राफी की। सीमा सड़क संगठन के कर्मचारियों ने आकर जे.सी.बी. से पेड़ हटाया तो वाहन आगे बढ़ने लगे। अनेक गांवों-कस्बों से होते हुए रात्रि 12 बजे बाद श्रीनगर पहुंचे जहां होटल माउटेंन व्यू में विश्राम किया। होटल छोटा पर साफ सुथरा व सुंदर था।

इस यात्रा विवरण को भावना मिश्रित यथार्थ में प्रस्तुत करने के लिए लेखक को बहुत-बहुत साधुवाद। आशा है कि यह पुस्तक भारतीय संस्कृति और स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाये रखने हेतु जनमानस में त्याग, बलिदान की भावना जागृत करने में सहायक होगी तथा अखण्ड भारत का मार्ग प्रशस्त करेगी।

-प्रो. के. एस. गुप्त

जिंदगी और मौत के दस्तावेज के बीच लेखक

अपने समय के स्थापित साहित्यकारों ने स्वतंत्र रूप से अथवा अपनी रचनाओं के माध्यम से समय-समय पर अपनी जिन्दगी और मौत के दस्तावेज लिखे हैं। अपने अनुभवों अथवा अनुभूतियों के स्तर पर उन्होंने जो कुछ महसूसा उसे पाठकों के साथ हिस्सेदारी की है।

प्रस्तुत पुस्तक में डॉ. कल्याणप्रसाद वर्मा ने साहित्य के पुरोधा जैनेन्द्रकुमार, अमृतलाल नागर, हरिशंकर परसाई, ख्वाजा अहमद अब्बास, आचार्य किशोरीदास वाजपेयी, डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण', विमल मित्र तथा डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने जिन्दगी और मौत से जुड़े जो विचार व्यक्त किये हैं उनका प्रकाशन किया गया है। ये सभी विचारक हिन्दी साहित्य के ख्यातलब्ध लेखक हैं। कादम्बिनी मासिक पत्रिका के 1977-78 के अंकों में जिन्दगी और मौत के दस्तावेज नाम से जो शृंखला प्रारम्भ की गई थी उसमें ये सभी लेखक सम्मिलित किये गए थे।

डॉ. कल्याणप्रसाद ने प्रारम्भ में प्रत्येक लेखक के जीवन और साहित्य पर सारगर्भित प्रकाश डालते हुए अंत में जिन्दगी और मौत के सम्बन्ध में लिखे गये मंतव्य को प्रकाशित किया है। उपन्यासकार जैनेन्द्रजी ने लिखा- कुशलता विद्वता की छाया भी मेरे पास न रह जाए। सिर्फ एक प्रेम ही प्रेम रह जाए। लिखने में, रहने में, जीने में, करने में प्रेम के सिवाय दूसरा मुझे कुछ अजीज नहीं है। जाते-जाते मृत्यु के सत्य के प्रति मेरे मन में प्रणाम हो और अपने लिए बस एक क्षमा की मांग हो। (पृ. 20)

हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा- जो जिन्दगी का कोई दस्तावेज नहीं बना सका वह मौत का दस्तावेज क्या तैयार करेगा। कौन जानता है कि कुछ बनाते-बनाते क्या बन जाऊं? सो मैं इस झमेले में नहीं पड़ता। (पृ.88)

यों हर प्रबुद्ध पाठक भी जिन्दगी और मौत को लेकर औरों के लिए ही नहीं, स्वयं अपने बारे में भी जानने की जिज्ञासा रखता है। इसीलिए यह पुस्तक एक भिन्न रूप में अधिक पठनीय और पठन के पूर्व उत्सुकता जगाने वाली है। इसका प्रकाशन 126 पृष्ठ लिये महेश प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, 926-बी, ग्रीन हाउस, चौड़ा रास्ता, जयपुर से हुआ है और मूल्य 150 रूपये है। **-डॉ. कहानी भानावत**

स्मृतियों के शिखर (68) : डॉ. महेन्द्र भानावत

डिंगल-पिंगल के रसज्ञ कविराव मोहनसिंह

उदयपुर आने के बाद कविराव मोहनसिंह से मेरा मिलना हुआ। ठीक से याद करूं तो 9 सितम्बर 1959 में मुझे मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत भटियाणी चौहट्टा में उनके निवास कविरावजी की हवेली ले गये। भाई साहब राजस्थानी वेलि साहित्य पर स्वामी नरोत्तमदासजी के निर्देशन में पीएच. डी. के लिए शोध कर रहे थे।

कविरावजी के आत्मसिक्त हेतालु व्यवहार, ज्ञान महोदधि मनोज्ञता, शानशौकत पूर्ण सुविज्ञता तथा बड़प्पनजनित विमलता से हम इतने उनके हो गए कि जब तक वे रहे मेरी उनसे भेंट होती रही। उन्हीं दिनों दैनिक हिन्दुस्तान में व्यक्ति : साहित्य और समस्याएं नामक साप्ताहिक स्तंभ बड़ा चर्चित था तब मैंने नरोत्तमदास स्वामी, देवीलाल सामर, गोवर्द्धनलाल जोशी, डॉ. मोतीलाल मेनारिया तथा कविराव मोहनसिंह पर भी लेख लिखे जो लम्बे समय तक विद्वद् जगत में सराहे जाते रहे। 17 फरवरी 1964 को कविरावजी का निधन हुआ।

कविराव मोहनसिंह के पूर्व पुरुष जाने-माने ख्यात कवि थे। वे जिस हवेली में रहते वह उनके पुरखों की राजदरबार द्वारा प्रदत्त हवेली थी। उन्होंने बताया कि उनके दादा कविराव बख्तावरसिंहजी आशुकवि थे। एकबार महाराणा शंभूसिंहजी जब देलवाड़ा पधारे तो उनकी प्रशंसा में दादाजी ने एक गीत सुनाया। महाराणा उसे सुन अत्यधिक प्रभावित हुए और कविराजजी को एक हाथी बख्शीश में देने की आज्ञा प्रदान की। इस पर कविजी ने महाराणा को निम्नलिखित दोहा सुनाया-

तेरे हाथी दियन को, संभ नृपति नित बान।
मेरे बांधन द्वार पर, गली नांहि नँह ठान।।

और विनती की कि आपश्री के पिताश्री महाराणा सरूपसिंहजी ने जगदीश चौक के पास जो हवेली दे रखी है, उसमें हाथी बांधने की जगह ही नहीं है।

इस पर महाराणा ने उसकी बजाय भट्यिानी चौहट्टे हवेली ही नहीं दी, एक हाथी की बजाय दो हाथी तथा घोड़े भी बगसीस में दिये। यही नहीं, उनके गहनेगांठे भी दिये और उनके खाने-दाने की व्यवस्था महलों से की। कविरावजी को दसरावे पर जब महलों में मुजरा होता तब हाथी-घोड़ों के लाव-लस्कर सहित महाराणा के सम्मुख हाजिर होना पड़ता। हवेली में भी हाथी-घोड़ों की पूजा की जाती और उन्हें खाने को हुंवाल्या, पापड़ी, लपसी, हलुआ, मूंग, चावल तथा गन्ने की पंगेरियां दी जाती। यह सारी व्यवस्था महलों की ओर से होती। इस प्रकार कविराव का प्रारंभिक जीवन बड़ी शान शौकत और ठाठबाट से व्यतीत हुआ।

हवेली में अच्छी बणगट के दो आलीशान गोखड़े थे। एक गोखड़े मे बैठने वाला दूसरे गोखड़े में बैठे व्यक्ति से बातचीत कर सकता था। मैं जब भी कविरावजी से मिलने गया, उनके गोखड़े के सम्मुख उनकी जोड़ायत मानकुंवर को पाया। कविजी ने उनसे भी मेरी भेंट कराई। मानकुंवर से ज्ञात हुआ कि वे भी अच्छी कविताएं लिखती हैं। लिख-लिख कर कविरावजी को भेजती हैं। कभीकभाक सुनाती हैं। कविरावजी उनकी प्रशंसा में कविता लिख जवाब भेजते हैं। कभी-कभी कागज की छोटी चींदी पर कविराव समस्यापूर्ति की पंक्ति भेजते तब मानकुंवर उस पर काव्य रचना कर पेश करतीं।

ऐसे भी अवसर आते जब दोनों ओर से प्यालों की मनुहार चलती। प्यालों के नशे में दोनों ओर काव्य-शक्ति प्रबल होती तब एक दूसरे की कविता सुनाई होती। ऐसे मौके भी आये जब कविता की चींदी के साथ-साथ भरे प्याले के हाथ तत्काल ही कविता पूर्ति की भराई कर दी जाती। ऐसे करते-करते दोनों ने हजारों छंदों की रचना की। डावड्यां इस कार्य में बड़ी सहायक होतीं। संध्या को सोते वक्त दोनों हम प्याला होते। समस्यापूर्ति की कोई पंक्ति किसी को जग जाती तो तत्काल कविता निपजती। दोनों एक-दूसरे को सुनाते। इस सुनसुनाटे में दोनों एक-दूसरे से सहज सवाये बनते, प्रेरणा पाते और काव्य-शक्ति का देर रात तक जागरण बना रहता।

अपने जीवनकाल संवत् 1956 से लेकर 2020 तक के दौरान कविराव मोहनसिंह ने हजारों की संख्या में गीत रचना की। उनके द्वारा मेवाड़ राज्य के ठिकानों में अस्त-व्यस्त पड़े हजारों राजस्थानी गीतों का संकलन हुआ। काव्य की विविध विधाओं में खंड काव्य से लेकर प्रबन्ध काव्य तक उन्होंने लिखे। चरित काव्य के साथ-साथ प्रशस्ति काव्य और मुक्तक काव्य भी लिखे। संख्यामूलक काव्य में पंचक, अष्टक, पच्चीसी, बत्तीसी, छिहत्तरी तथा सतसई तक की रचना की। विधामूलक काव्य-सृजन में प्रकाश, विलास, नीसांणी, जस, वर्णन, आख्यान, वारता, भूषण, मरसिया, पदावली, चरित तथा अलंकार नामित रचनाएं कीं। उनका लिखा गद्य साहित्य भी मिलता है पर पद्य की अपेक्षा उसकी संख्या बहुत ही सीमित है।

कवयित्री मानकंवर ने भी कविराव मोहनसिंह की देखादेख पर्याप्त मात्रा में काव्य रचना की। उनके मुंह से अनेक बार उनकी लिखी रचनाएं सुनने का मुझे अवसर मिला। उनकी लिखी पहली रचना सती चरित्र है। यह हिन्दी में दोहा, सवैया, चौपाई, कुंडलियां तथा छप्पय में लिखी गई है। दो पच्चीसियों में दम्मू पच्चीसी की रचना जयपुर के ठाकुर प्रतापसिंहजी की पुत्री दमयंती पर की गई है। दूसरी प्रेरणा पच्चीसी नैतिक, धार्मिक तथा अध्यात्मजनित उपदेशों पर है। नेता सतसई में नेताओं के युग-धर्म को लेकर देश के खास-प्रमुख नेताओं के जीवन चरित का वर्णन दोहा और सोरठा छंद में है। कविराव के निधन के पश्चात उन्होंने उन पर श्रद्धांजलि काव्य लिखा। उनका निधन 1972 में हुआ।

कविराव मोहनसिंह कुशाग्र बुद्धि के, प्रत्युत्पन्न मति के धनी मनीषी थे। जहां महाराणा फतहसिंहजी और महाराणा भूपालसिंहजी उनकी काव्य शक्ति के कायल थे वहीं उनके सभासदों में कुछ लोग उनसे नाखुश भी रहते थे। ऐसे कई प्रसंग आये जब उनकी परीक्षा ली गई किन्तु अपनी हाजिरजवाबी दक्षता, व्यंग्यविदग्धता तथा खरीखोटी सुनाने की दृढ़ता से उन्होंने कभी मात नहीं खाई किन्तु अन्यों को निरूत्तर करने में कोई कसर बाकी नहीं रखी।

अपने निवास स्थान पर किस्सेबाज लक्ष्मीनारायण राव ने 15 दिसम्बर 2000 को मुझे बहुत सारे मजेदार किस्सों के बीच कविराव मोहनसिंह से संबंधित एक घटना का जिक्र किया। उसके अनुसार महाराणा फतहसिंहजी की कन्या का सगपण जोधपुर ठिकाने में किया। तदनुसार जोधपुर महाराजा सरदारसिंहजी शाही बरात लेकर हाजिर हुए। बड़े तन-मन से बरातियों का स्वागत किया गया। तोरण का वक्त आया। बनड़ाजी हाथी पर सवार हो जोधपुरी शाही पोशाक में तोरण वांदने पधारे, किंतु हाथी ने तोरण नहीं वांदने दिया। सभी तरह से हाथी का लाड़-दुलार-पुचकार किया गया पर हाथी टस से मस नहीं हुआ।

इससे सभी घराती और बराती चिंतित हो गये। तोरण का वक्त टला जा रहा था और दोनों ओर से किये गये सारे उपाय निष्फल हो गए। अन्त में अन्य कोई उपाय नहीं सूझ कर कविरावजी पर कुछ लोगों की निगाह बन आई। कविरावजी के लिए यह घोर परीक्षा की घड़ी थी। एक तरह से उनके लिए जीवन-मरण का प्रश्न था। महाराणा के पक्ष के, कविरावजी के शुभेच्छु बोलने लगे, कविराव हिम्मत हारने वाले नहीं हैं। ऐसे कई अवसर पहले भी आये जब कविराव ने डूबती नैया को तारा है और अपनी जादुई करामात का परचम फहराया है। मेवाड़ की मान-मर्यादा और शान-शौकत की सब ओर वाहवाही हुई है।

इतने में कविराव को बुद्धि उपजी। उन्होंने हाथ जोड़ अपनी बात अरज करी। कहा- 'बनड़ाजी आपणे माथै जोधपुर रो साफो धारण कर राख्यो है सो तो घणोई चोखो है। वां नै सोभायमान भी है पण गलती माफ वै, यो मेवाड़ है। अठारी मान मरजादा और शान-शौकत री रगस्या वेणी जरूरी है। इण खातर सायद हाथी अड़ पकड़ लीधी है। म्हारी समझऊं बनड़ाजी माथै मेवाड़ी पगड़ी धराई जाय तो हाथी मान जावै।'

कविरावजी से यह सुनते ही फटाफट लख-लख हीरा जड़ित अमरशाही पगड़ी मंगवा बनड़ाजी को धारण कराई गई। देखते-देखते हाथी तोरण के पास पहुंचा और तोरण वांदने का मुहूर्त पूरा किया। यह देख सब ओर कविरावजी की तूती बोलने लगी।

कविरावजी का पृथ्वीराज रासो के असल मूल पाठ का निर्धारण सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य कहा गया जो अन्यों के लिए सम्भव नहीं था। पं. जनार्दनराय नागर ने इसके लिए कविरावजी को साहित्य संस्थान में बैठक दी। कविराव प्रतिदिन दरबारी कवि की तरह शानदार घोड़े वाले तांगे में सवारी कर संस्थान पहुंचते। वहां वे ऊंचे आसन पर बैठते। पं. उमाशंकर शुक्ल उनके सहायक के रूप में इस काम में हाथ बंटाते। रासो के सभी रूपों को एकत्र कर वर्णन शैली, भाषा, छन्द विधान आदि हर दृष्टि से बड़ी गंभीरतापूर्वक अध्ययन-अन्वेषण कर हजारों छन्दों में वर्णित रासो का पांच हजार छन्दों में असल मूल स्वरूप निखारा।

एक हरियाली अमावस्या को मैं भी इस बैठक में संस्थान पहुंच गया। कविजी का दरबार लगा हुआ था। डॉ. शान्ति भारद्वाज, मंगल सक्सेना, ओंकारश्री तथा संस्थान के बिहारीलाल व्यास, सौभाग्यसिंह शेखावत, कृष्णचन्द्र शास्त्री, सांवलदानजी आशिया, मुरलीधर वर्मा, पं. उमाशंकर थे। बातों ही बातों में महफिल की रंगत हरियाली अमावस्या पर प्रमुखता से बनने वाले रबड़ी, मालपुए पर केन्द्रित हो गई। कविराव स्वयं सबसे अल्हड़ महफिलबाज, खुले खरचीवान, दिल दरियाव तथा मसखरीमार थे। रबड़ी मालपुओं का नाम लेते ही सेवक मेघराज और किशोर को बुलाया और सबको छककर मिठाई खिलाई।

एक दिन मेरे घर पर जमी बैठक के दौरान शुक्लजी ने बताया- 'कविराव मस्त तबीयत के बड़े उदारदिल दिलदार व्यक्ति थे। जब लिखाने बैठते तो लगता साक्षात् सुरसत अवतरित हो रही है। वे बोलते, मैं लिखता जाता। कई बार लिखते-लिखते अंगुलियां थक जातीं। कमर अकड़ जाती लेकिन खिलाने-पिलाने के बड़े शौकीन थे। कभी कचौरी, कभी समोसा तो कभी आलू बड़ा और पकौड़े खाने को मिलते। जलेबी मुरमुरी उनकी खास पसंद थी। उनसे मिलने आने वालों का तांता लगा ही रहता। वे किसी को निराश नहीं करते। हर दिल अजीज थे।'

'भारतीय साहित्य रा निरमाता' सिरीज के अन्तर्गत कविराव मोहनसिंह नामक एक पुस्तक भी राजस्थानी में मैंने लिखी जिसका प्रकाशन 2002 में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से हुआ। कविरावजी से जब-जब भी भेंट हुई वह यादगार ही बनी। एकबार उन्होंने मुझे बिहारी सतसई के 14 दोहों का राजस्थानी में किया अनुवाद दिया जिसे मूल सहित यहां प्रकाशित किया जा रहा है-

(1)

मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोय।
जा तन की झांई परे, श्याम हरि तदुति होय।।
सुहड़ी राधा माहरी, भो बाधा हरजेह।
झलक पड्यां थां, श्यामरी दुतहरियोड़ी- हे ह।।

(2)

जुवति जोन्ह में मिल गई, नेक न होति लखाई।
सोंधे के डोरे लगी, अली चळी संग जाई।।
मिली चांदणे भामिणी, नहं पिछाल में आय।
खुशबू धोरे खोजती, साथण साथ सिधाय।।

(3)

चितई ललचोहे चखनि, डरि घूंघट पर मांह।
छल सूं चली छुवाय के, छिनक छबीली छांह।।
लख ललचाण लोयणां, डट पट घूंघटड़ेह।
छळ सूं छू चाली छिणक, छांह छबीली देह।।

(4)

कीनेहू कोटिक जतन, अब कहु काढ़े कौन।
मो मन मोहन रूप मिलि, पानी में को लौना।।
कोड़ जतन कीधा हमे, कहो निकाले कूण।
मन व्हो मोहन रूप धुल, पाणी मेंलो लूण।।

(5)

बेधत अनियारे नयन, बेघत कर न निषेध।
बर बर बेधत मोहियो, तो नाशा को बेध।।
अणियाळा भेदे नयण, की अचरज यांरोह।
नाक छेद छेदे हियो, मांदूयां ही म्हांरोह।।

(6)

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत है, नैनन ही सों बात।।
कहे, नटे, रीझे, खिझे, मिळ, हुळसे, शटजाय।
भामण भरियोड़े भवन, नैणां में बतळाय।।

(7)

नेह न नैनन को कछू, उपजी बड़ी बलाइ।
नीर भरे नित प्रति रहे,तऊ न प्यास बुझाइ ।।
नैणां लग्यो न नेहड़ो, उपजी बळाज कोय।
तोय भर्योड़ा नित रहे, तिरसा बुझे न तोय।।

(8)

पिय तियसों हंसिके कह्यो, लखें ट्रिठो ना दीन्ह।
चन्दमुखी मुख चन्दतें, भलो, चन्द सम कीन्ह।।
दीध दिठोणो निरख पी, तीसूं हंस कहियोह।
चंदरमुखी मुख चंदरमा, सागे चांद कियोह।।

(9)

साजे मोहन मोह को, मोहीं करत कुचैन।
कहा करों उलटे परे, टोने लोने नैन।।
मोहन मोहण म्हें सज्या, मोहि लग्या दुख देण।
ई टोणा उळटा पड्या, निपट सळोणां नैण।।

-शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 01 फरवरी 2019

सम्पादकीय

वह समय यह समय

आजादी से पूर्व का समय और आजाद होते ही जो समय जिसने भी देखा वह उसके बदलाव को महसूस कर पाया था। उसके बाद का लम्बा समय बकौल महादेवी वर्मा 'बीन भी हूं मैं तुम्हारी रागिनी भी हूं' का ही निकला।

लेकिन आज के समय में देखें तो लगता है, कई दृष्टियों से, ऊंट पहाड़ के नीचे जैसा दृष्टिगत हो रहा है। ऐसे में बच्चों का वह खेल याद आ रहा है जिसमें एक बच्चा दूसरे को घोड़ी बना उस पर सवार होता मचोले लेता है और उसकी वारी पूरी होने पर वह पलटी खाते जो बच्चा सवार बना है उससे कहता है- 'उतर भीखा म्हारी वारी।' यह कह वह सवार बने बच्चे को घोड़ी बनाकर उसकी पीठ पर जा चढ़ता है।

आज की राजनीति में भी वैसा ही खेल है पर बच्चों जैसी समझ और सौहार्द्र नहीं है। उठापटक है। लत्ती-दुलत्ती का झाड़न है। आक्रोश है। आंखों में गड़े डोरे लाल हैं। बेहूदी भाषा में कर्कशता है। आदर-सम्मान की उठनी की बजाय पटकनी देती नीचनी है। नेहले पर देहला देने की बजाय बदमिजाजी तथा बौखलाहट है।

पड़ोसी बेचैनी देता अपनी चैन खो रहा है। भ्रांतिवश आफत ओढ़ने को फतै पाना समझ रहा है। शीर्षासन पर बैठों को 'शीश पगा न झगा तन में' जैसी स्थिति डांवाडोल कर रही है। गन्ने की सारी पंगेरियों में गांठों का बंधन पड़ने से रस का सरसपन जाता दिखाई दे रहा है। पहले देश-राग उमड़ता था। अब 'निज सत्ता उन्नति अहो, सब उन्नति को मूल' राग का लपलपा प्रधान हो गया है।

इतना होते हुए भी राम का खेत लूटा नहीं है। उसकी चिड़िया बुद्धि, विवेक, बल और समय की विचारणा में सोई नहीं है। उसकी पांखों की मड़मड़ाहट मरी नहीं है। अपने घोंसले की कनखियों से आँखें तेज किए वह कभी भी निकलने को बेताब बनी हुई है। उसकी शकुन्तला के कुन्तल झड़े नहीं हैं। राधा की धारा सूखी नहीं है। झांसी की रानी का रण-रंग फीका नहीं पड़ा है। जवाहरबाई की रणधीराओं की आग बुझी नहीं है। पन्नाधाय का बलिदान निस्तेज नहीं हुआ है। पद्मिनी के पौरूष-पराक्रम की उड़ान थमी नहीं है और मीरां की माटी का मोल अमोल अम्लान ही बना हुआ है।

आफरीदी मुख्यमंत्री के विशेषाधिकारी बने

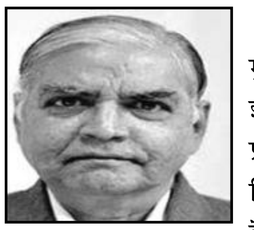

वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार फारूक आफरीदी को मुख्यमंत्री का विशेषाधिकारी नियुक्त किया गया है। इससे पूर्व वे मुख्यमंत्री एवं राज्यपाल जनसम्पर्क प्रकोष्ठ तथा सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के संयुक्त निदेशक पद पर लम्बे समय तक अपनी सेवाएं दे चुके हैं। वे राज्य सरकार के पत्र 'राजस्थान सुजस' के सम्पादक भी रहे। उनका 'मीनमेख' तथा 'शब्द कभी बांझ नहीं होते' नामक व्यंग्य तथा कविता संग्रह प्रकाशित है।

उदयपुर सहकारी उपभोक्ता थोक भण्डार लि. शास्त्री सर्कल, उदयपुर (राज.)

गणतंत्र दिवस पर भण्डार के सभी सदस्यों एवं उपभोक्ताओं को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई

(प्रेम प्रकाश माण्डोत) प्रकाशक

(आशुतोष भट्ट) महाप्रबन्धक

प्रत्येक प्रांत में दैनिक राजस्थानी पत्र का प्रकाशन हो : पदम मेहता

जोधपुर से प्रकाशित दैनिक जलते दीप तथा राजस्थानी मासिक माणक के सम्पादक-प्रकाशक पदम मेहता ने 18 जनवरी 2019 को शब्द रंजन कार्यालय में डॉ. महेन्द्र भानावत से भेंट की। डॉ. तुक्तक भानावत ने सम्मान्य मेहताजी का स्वागत किया और बताया कि शब्द रंजन को प्रकाशित होते तीन वर्ष पूरे हो गए हैं।

इसके माध्यम से प्रबुद्धजनों को घर बैठे राजस्थान की लोककला, संस्कृति, जीवनधर्मिता तथा परम्पराजीवी विरासत वैभव की जानकारी सुलभ हो जाती है।

लगभग एक घण्टे की बैठक में मेहताजी से डॉ. भानावत की राजस्थानी भाषा की मान्यता, राजस्थानी लोककला संस्कृति, उसकी सबरंग समृद्धि और बदलते सन्दर्भ में आ रही चुनौतियों, युवा पीढ़ी से जुड़े सृजनात्मक सरोकारों, विश्वविद्यालयों में हो रहे अध्ययन-अन्वेषणों जैसे विषयों पर गंभीर चर्चा हुई।

मेहताजी ने पिछले 20-25 वर्षों से उनके द्वारा राजस्थानी भाषा को मान्यता के सन्दर्भ में दिये गए धरनों, आन्दोलनों, विज्ञप्तियों, राजनेताओं से की गई भेंटों के सम्बन्ध में चर्चा की और उम्मीद जताई कि सत्ता परिवर्तन से अब उन्हें पूरा विश्वास है कि राजस्थानी संवैधानिक मान्यता पाकर गौरवासीन होगी।

डॉ. भानावत ने कहा कि राजनेताओं के लिए भाषा का मसला खूंटी पर लटकी झोली की तरह है जो धीरे-धीरे मकड़ी के जालों की तरह उलझा दी जाती है। उनके आश्वासनों के दिव्यांग खेत में खड़े अड़वों की तरह होते हैं जो खेती नहीं होने पर भी अकड़े रहते हैं।

उन्होंने कहा कि राजस्थानी के प्रति जितना लगाव, पीड़, हमदर्दी और मान्यताजनित निस्वार्थ छटपटाहट पदमजी में देखने को मिलती है, अन्यों में बमुश्किल ही मिलेगी। इस पर पदमजी ने बुलन्दगी के साथ अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति व्यक्त करते कहा कि उनका अगला कदम देश के प्रत्येक प्रांत में राजस्थानी का दैनिक पत्र प्रारम्भ करने का रहेगा।

डॉ. भानावत ने उन्हें आश्वस्त किया कि सच्चे मन से किये गए संकल्प के साथ धीरे-धीरे कई साथी जुड़ते चलते हैं। हम पूरे प्रण-मन से आपके साथ हैं। कभी यह न समझें कि आप अपनी अकेली नाव के अकेले खिवैये हैं। इस अवसर पर डॉ. भानावत ने पदमजी मेहता को उनके समृद्ध राजस्थानी पुस्तकालय के लिए अपनी लिखी एक दर्जन पुस्तकें भेंट कीं।

मेहता आईपीएमए के अध्यक्ष निर्वाचित

उदयपुर। ए. एस. मेहता गत दिनों नई दिल्ली में इंडियन पेपर मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन (आईपीएमए) द्वारा आयोजित 19वें वार्षिक सम्मेलन में अध्यक्ष चुने गए। बड़ीसादड़ी निवासी मेहता वर्तमान में जे. के. पेपर लि. के प्रेसीडेंट हैं।

इस अवसर पर आयोजित समारोह में उन्होंने कहा कि हमें इस भ्रम को तोड़ना होगा कि कागज निर्माण के लिए देश में हजारों पेड़ नष्ट किये जा रहे हैं जबकि सच्चाई यह है कि इसके लिए किसानों द्वारा करीब 9 लाख हैक्टेयर का वनीकरण किया गया है। इसमें विशेष किस्म के नये पेड़ उगाये जाकर लगभग 90 फीसदी कच्चा माल प्राप्त किया जाता है। इससे करीब पांच लाख किसानों को रोजगार मिला है। इन नव पेड़ों से बने कागज की मांग विदेशों में भी बढ़ती जा रही है।

विशिष्ट अतिथि केन्द्रीय वाणिज्य, उद्योग एवं नागर विमानन मंत्री सुरेश प्रभु ने कहा कि घरेलू स्तर पर कागज विनिर्माण को बढ़ावा देना सरकार की व्यापार नीति की प्राथमिकताओं में है।

पेपर इंडस्ट्री देश के महत्वपूर्ण उद्योगों में है। निवर्तमान अध्यक्ष सौरभ बांगड़ ने कहा कि पिछले दस सालों में देश में कागज की खपत दुगुनी हो गई है जो वर्ष 2019-20 तक दो करोड़ टन होने का अनुमान है।

विविध प्रतिष्ठानों में ध्वजारोहण

जिला स्तरीय समारोह में संभागीय आयुक्त भवानीसिंह देथा ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। ध्वजारोहण के पश्चात राष्ट्रीय गान हुआ और मुख्य अतिथि द्वारा परेड का निरीक्षण किया गया। पुलिस, एनसीसी, स्काउट, गाइड व पुलिस बैण्ड की टुकडियों ने मार्च पास्ट कर सलामी दी। समारोह में अतिरिक्त जिला कलक्टर (प्रशासन) चांदमल वर्मा ने राज्यपाल का संदेश पठन किया। इस अवसर पर नगर निगम महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, पुलिस महानिरीक्षक प्रफुल्ल कुमार, देवस्थान आयुक्त कृष्ण कुणाल, खान एवं भू विज्ञान निदेशक जितेन्द्र उपाध्याय, अतिरिक्त संभागीय आयुक्त जगमोहन सिंह व श्रीमती विनीता बोहरा, जिला कलक्टर श्रीमती आनंदी, जिला पुलिस अधीक्षक कैलाश चन्द्र विश्नोई, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी कमर चौधरी, मुख्य वन संरक्षक इन्द्रपाल सिंह मथारू, अतिरिक्त जिला कलक्टर (शहर) संजय कुमार सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी, समाजसेवी, स्कूली शिक्षक एवं विद्यार्थी व बड़ी संख्या में आमजन मौजूद थे।

नारायण सेवा संस्थान

हिन्दुस्तान ज़िंक की चीफ पीपुल ऑफिसर सुश्री कविता सिंह ने राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए कहा कि मानव संसाधन की सुरक्षा बहुत जरूरी है। कार्य के दौरान हेल्मेट पहनना, वाहन चलाते समय सीट-बेल्ट जैसे उपकरणों का उपयोग जरूरी होना चाहिए। सुरक्षा के प्रति किसी भी तरह की लापरवाही का समझौता नहीं होना चाहिए तथा सुरक्षा ही सर्वोपरि प्राथमिकता होनी चाहिए।

हिन्दुस्तान ज़िंक

नारायण सेवा संस्थान के हिरण मगरी सेक्टर 4,अपना घर व सेवा महातीर्थ बड़ी में गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। संस्थापक कैलाश मानव ने मानव मंदिर में, सह-संस्थापिका कमलादेवी अग्रवाल ने अंकुर कॉम्पलेक्स में, सेवा महातीर्थ बड़ी व सेवा परमो धर्म ट्रस्ट के अपना घर में अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। बड़ी में आयोजित समारोह में निशक्त दिव्यांग, प्रज्ञाचक्षु, एवं मूक बधिर विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक एवं जिम्नास्टिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी। इस मौके पर निदेशक वंदना अग्रवाल, ट्रस्टी देवेन्द्र चौबीसा, श्यामसुन्दर मंत्री, डॉ. मानस रंजन साहू ,राज अरोड़ा आदि उपस्थित थे।

गीतांजली मेडिकल कॉलेज

गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल में मुख्य अतिथि जेपी अग्रवाल, विशिष्ट अतिथि गीतादेवी अग्रवाल, वाईस चांसलर डॉ. आर. के नाहर, एक्जूक्यूटीव डायरेक्टर अंकित अग्रवाल, डीन डॉ. प्रो. एफएस मेहता, सीईओ प्रतीम तंबोली ने तिरंगा फहराया। कार्यक्रम में 110 चिकित्सकों एवं कर्मचारियों को उनकी दस वर्षीय निष्ठावान सेवा के फलस्वरूप प्रशंसापत्र देकर सम्मानित किया गया।

जनार्दनराय नागर विश्वविद्यालय

जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डिम्ड टू विश्वविद्यालय में कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने झण्डारोहण किया। विशिष्ट अतिथि एआईयू नई दिल्ली के जोईंट डायरेक्टर डॉ. गुरजीप सिंह थे। प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही शांति व न्याय का मार्ग है। संचालन डॉ. हीना खान, डॉ. हरीश चौबीसा, डॉ. वृंदा शर्मा, डॉ. लीली जैन ने किया।

डेबिट कार्ड एटीएम कार्ड से बेहतर

उदयपुर। डेबिट कार्ड से बड़ी आसानी और सुरक्षित तरीके से भुगतान किया जा सकता है। यह आपके बैंक खाते के आधार पर किसी एटीएम से नकद निकालने की सुविधा प्रदान करता है। कई लोगों के डेबिट कार्ड का इस्तेमाल सिर्फ एटीएम से पैसे निकालने तक ही सीमित हो जाता है। लोग डेबिट कार्ड द्वारा किराना, सिनेमा के टिकिट, यात्रा टिकिट, होम डिलेवरी ,खाना, मेंबरशिप, इलेक्ट्रानिक्स अपनी दैनिक आवश्यकता के अनुसार खरीद सकते हैं।

साउथ एशिया, वीजा के ग्रुप कंट्री कंपनी मैनेजर, टीआर रामचंद्रन ने कहा कि 2016 में जहां पीओएस टर्मिनल्स की संख्या महज दो लाख थी वह आज बढ़कर 34 लाख से भी ज्यादा हो गई है। इससे हमारे देश में भुगतान इंफ्रास्ट्रक्चर में लगातार सुधार हो रहा है। ऐसे टच पाइंटों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है, जहां ग्राहक भुगतान करने के लिए अपने कार्डों का उपयोग कर सकता है। सरकार भी डिजिटल भुगतान को बढ़ाने के लिए लगातार इस प्रणाली में प्रयास कर रही है। ऐसे में नागरिकों का यह कर्तव्य है कि, इस तरह की सुविधाओं का ज्यादा प्रभावी तरीकों से उपयोग करें तथा नकद के खिलाफ देश की लड़ाई में अपना योगदान दें।

बीकेटी ग्रामीण ओलम्पिक्स का स्पॉन्सर बना

उदयपुर। भारत में ऑफ-हाइवे टायर्स के अग्रणी उत्पादक बालकृष्ण इंडस्ट्रीज लि. (बीकेटी) ने किला रायपुर स्पोर्ट्स फेस्विटल के 83वें संस्करण के पेजेंटिंग पार्टनर के तौर पर हस्ताक्षर किये हैं। इस आयोजन के एक भागीदार के रूप में यह बीकेटी का पहला वर्ष होगा। किला रायपुर स्पोर्ट्स फेस्टिवल के टाइटल स्पॉन्सर के तौर पर बीकेटी की कार्यवाही विभिन्न क्षेत्रों में होगी, जैसे प्रचार और ब्रांडिंग। नाम के अधिकार के अलावा बीकेटी इस आयोजन में ब्रांडिंग भी करेगा, जैसे फ्लेक्स बोर्ड्स और वॉल पेंटिंग। वेन्यू में बीकेटी अपने उत्पादों की व्यापक श्रृंखला का प्रदर्शन करेगा और तीन दिवसीय आयोजन के दौरान आगंतुकों को अनूठे उपहार भी देगा।

बालकृष्ण इंडस्ट्रीज लि. (बीकेटी) के संयुक्त प्रबंध निदेशक राजीव पोद्दार ने कहा कि ग्रामीण ओलम्पिक्स के नाम से लोकप्रिय किला रायपुर स्पोर्ट्स फेस्टिवल पंजाब के किला रायपुर (लुधियाना के पास) में प्रतिवर्ष आयोजित होता है। प्रमुख ग्रामीण खेलों की प्रतियोगिताएं होती हैं, जैसे ट्रैक्टर रेस, डॉग रेस, म्यूल रेस, कार्ट-रेस, एथलेटिक इवेंट्स और टग ऑफ वार। इस तीन दिवसीय उत्सव के लगभग एक मिलियन दर्शक होंगे। फरवरी 1-3, 2019 से लुधियाना सैकड़ों खेल प्रेमियों का गंतव्य बन जाएगा, जिनमें अन्य देशों के लोग भी होंगे। वह बैलों, ऊँटों, कुत्तों, खच्चरों और अन्य पशुओं की विशेष नस्ल को देखने किला रायपुर आएंगे, जो प्रतिस्पर्द्धा में भाग लेंगी।

इंसुलिन इंजेक्शन लगाने की सही तकनीक पर जोर

उदयपुर। मधुमेह भारत में एक महामारी बन चुका है, जिसके 72.9 मिलियन से अधिक रोगी हैं। मधुमेह प्रबंधन के महत्व पर मेडिकल टेक्नोलॉजी कंपनी बीडी-इंडिया ने एक जागरूकता अभियान का आयोजन किया, जो इंसुलिन इंजेक्शन की सही तकनीक पर केन्द्रित था। इस अभियान में अग्रणी एंडोक्राइनोलॉजिस्ट्स और मधुमेह शिक्षाविदों ने भाग लिया और मधुमेह के बेहतर प्रबंधन के लिये इंसुलिन इंजेक्शन तकनीक पर जोर दिया। डॉ. डी. सी. शर्मा, सीनियर कंसल्टेन्ट एंडोक्राइनोलॉजी एंड डायबीटीज, इंस्टिट्यूट ऑफ डायबीटीज, थायराइड एंड हार्मोन्स, सृजन हॉस्पिटल ने कहा कि वर्तमान में इंजेक्शन से ही इंसुलिन दिया जा सकता है। बीडी द्वारा इंसुलिन इंजेक्शन पर जानकारी को समर्पित दिन तय किया जाना स्वागत योग्य है। इससे चिकित्सकों और रोगियों के बीच इंसुलिन इंजेक्शन की स्वीकार्यता बढ़ेगी। वर्तमान में शहर में मधुमेह से पीड़ित 20 प्रतिशत रोगी इंसुलिन पर हैं। ऐसे जागरूकता अभियानों से इंजेक्शन के प्रति लोगों का डर दूर होगा और वह उपचार में विलंब नहीं करेंगे।

बीडी इंडिया एवं साउथ एशिया के प्रबंध निदेशक पवन मोचेरला ने कहा कि मधुमेह के प्रभावी प्रबंधन में इंसुलिन आपूर्ति तकनीक की शिक्षा महत्वपूर्ण है।

लैंड रोवर लैंडमार्क एडिशन लॉन्च

उदयपुर। जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने मॉडल ईयर 2019 डिस्कवरी स्पोर्ट लैंडमार्क एडिशन को लॉन्च की घोषणा की है। लैंडमार्क एडिशन 2.0 लीटर इंजेनियम डीजल द्वारा पावर्ड है, जो एक पावरफुल 132 केडब्ल्यू आउटपुट देता है और वाहन के ऐडवेंचर के असली जोश को दिखाता है। यह अनूठा वैरिएंट तीन एक्सक्लूसिव एक्सटीरियर रंगों, नार्विक ब्लैक, युलॉन्ग व्हाइट और कॉरिस ग्रे में उपलब्ध है और इसकी कीमत 53.77 लाख रूपये एक्स-शोरूम है।

रोहित सूरी, प्रेसिडेंट एवं मैनेजिंग डायरेक्टर, जगुआर लैंड रोवर इंडिया लि. (जेएलआरआइएल) ने कहा कि मॉडल ईयर 2019 डिस्कवरी स्पोर्ट के लिये लैंडमार्क एडिशन की पेशकश डिस्कवरी स्पोर्ट पोर्टफोलियो को और भी बेहतर बनाती है। यह स्पेशल एडिशन वैरिएंट वाहन के लिये उल्लेखनीय खूबियों की पेशकश करता है, जिससे इसकी बेमिसाल दक्षता, वर्सेटिलिटी और ऐडवेंचर का जोश और मजबूत हो जाता है। इसमें एक स्पोर्टी और डायनैमिक फ्रंट बम्पर, ग्रैफाइट एटलस एक्सटीरियर एसेंट्स और ग्लॉस डार्क ग्रे में 45.72 सेमी (18) 5 स्पिलिट स्पोक 511 व्हील्स की खूबी है। वाहन के एक्सटीरियर को ईबोनी ग्रेन्ड लेदर सीट्स और ईबोनी हेडलाइनर द्वारा और भी खूबसूरत बनाया गया है। साथ ही सेंटर स्टैक के चारों ओर डार्क ग्रे एल्युमिनियम फिनिशर्स दिये गये हैं।

टाटा की एसयूवी- हैरियर लॉन्च

उदयपुर। टाटा मोटर्स ने अपनी बहुप्रतीक्षित एसयूवी हैरियर लॉन्च की है। ऑटो एक्स्पो 2018 में पहली बार अपने कॉन्सेप्ट एच5एक्स को प्रदर्शित करने के बाद से ही इसने सभी को प्रभावित किया है। हैरियर राजस्थान में टाटा मोटर्स के अधिकृत सेल्स आउटलेट्स में 12.69 लाख रूपये की शुरुआती कीमत में बिक्री के लिये उपलब्ध होगी।

मयंक पारिक, प्रेसिडेंट, पैसेंजर व्हीकल बिजनेस यूनिट ने कहा कि हैरियर वास्तव में एक वैश्विक एसयूवी है, जो डिजाइन और उत्कृष्टता के परफेक्ट संयोजन की पेशकश करती है। इस थोरोब्रेड एसयूवी को ऑप्टिमल मॉड्यूलर एफिशियेन्ट ग्लोबल एडवांस्ड (ओएमईजीए/ओमेगा) आर्किटेक्चर पर बनाया गया है और यह विविध क्षेत्रों में बेहतरीन ड्राइविंग डायनैमिक्स का वादा करती है। हैरियर वह पहला वाहन है, जिसमें टाटा मोटर्स की इम्पैक्ट डिजाइन 2.0 डिजाइन लैंग्वेज है, जो आकर्षक एक्सटीरियर्स और लक्जुरियस इंटीरियर्स के साथ ग्राहकों को पसंद आएगी।

विवेक श्रीवत्सा, हेड, मार्केटिंग, पैसेंजर व्हीकल बिजनेस यूनिट, टाटा मोटर्स ने कहा कि टाटा हैरियर के माध्यम से हम प्रीमियम मिड-साइज एसयूवी सेगमेंट में कदम रख रहे हैं।

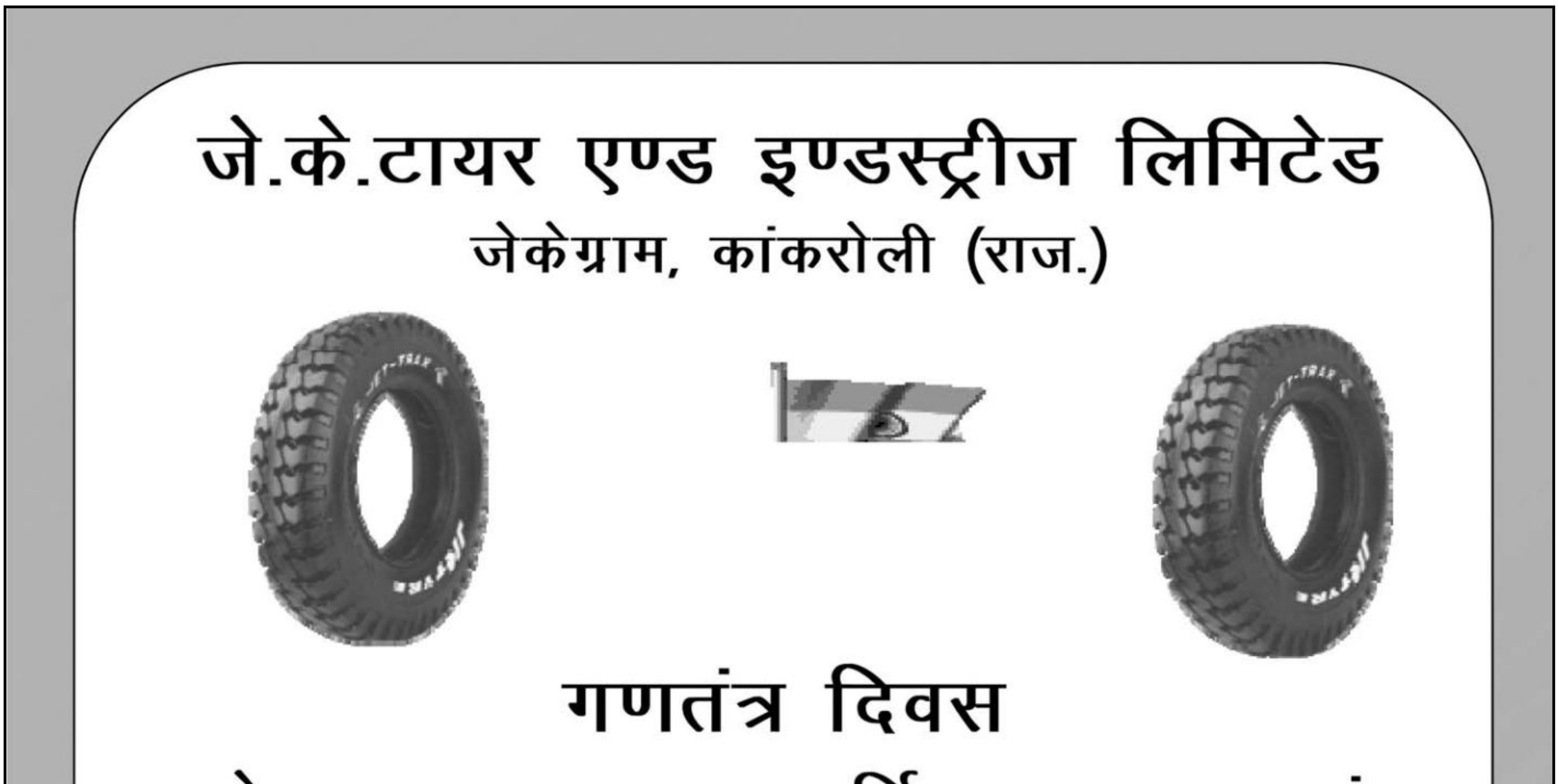

राणापतापनगर व मावली के प्लेटफोर्म हाई लेवल बनेंगे

अजमेर मंडल में यात्री सेवाओं में विस्तार की कड़ी में उदयपुर के राणापतापनगर के एक तथा मावली जं के तीन प्लेटफोर्म को हाई लेवल प्लेटफोर्म के रूप में विकसित किया जाएगा। उदयपुर सांसद अर्जुनलाल मीणा द्वारा अपर मंडल रेल प्रबंधक सुनील अग्रवाल तथा अन्य जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में शिलान्यास किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक महेशचंद जेवलिया, मंडल इंजीनियर मयंककुमार गुप्ता सहित मंडल के अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे। 3.77 करोड़ की लागत के यह कार्य 30 जून 2019 तक पूर्ण किया जाएगा।

आर्ची आर्केड प्रोजेक्ट का भूमि पूजन

उदयपुर। आर्ची ग्रुप के नये प्रोजेक्ट आर्ची आर्केड का भूमि पूजन बुधवार को न्यू भूपालपुरा में हुआ। लगभग 22500 स्क्वायर फीट में निर्मित होने वाले नौ मंजिला इस प्रोजेक्ट में कुल 56 फ्लैट बनाये जायेंगे। यह कार्य लगभग तीन वर्ष में पूरा हो जाएगा। इस प्रोजेक्ट में सुविधाओं के तौर पर जिम, सोसायटी हॉल, इंडोर गैम्स, जैन मंदिर, गार्डन आदि शामिल है। इस अवसर पर आर्ची ग्रुप के डायरेक्टर ऋषभ भाणावत, लोकेश मल्हारा, दिनेश जैन, हिमांशु चौधरी, डॉ. महेन्द्र भानावत, शैलेष नागदा, मुकेश जैन, डूंगर कोठारी, शैलेष सरूपरिया, राजीव जैन, विनीत सरूपरिया, संयम सिंघवी, भरत वैष्णव, संभव बांठिया, मीठालाल भाणावत, नवरत्न नागौरी सहित शहर के कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

समाजरत्न रतनलाल मेहरी नहीं रहे

मूलत: कानोड़ निवासी रतनलाल मेहरी का 25 जनवरी 2019 को निधन हो गया। राजस्थान के शिक्षा विभाग में विभिन्न पदों पर रहते अन्त में कार्यालय अधीक्षक पद से सेवानिवृत्त हुए। उनके सम्पर्क में जो भी आया, हर सम्भव उसकी सहायता करने का उन्होंने सुख और संतोष प्राप्त किया। यही कारण रहा कि अंतिम समय तक वे समाज और शिक्षा जगत में सबके 'रतन' बने रहे।

एक साधारण परिवार में जन्म लेकर रतनलाल जैन को बालपन में ही माता का बिछोह झेलना पड़ा फलस्वरूप पिताश्री कन्हैयालाल ने उन्हें 'रतन जतन कर राखजो ए मां' की संगति और संस्कारों से सुयोग्य बनाया। वे हर दिल अजीज, मिलनसार, सहज सहृदय, आत्मीय तथा सहयोगी स्वभाव लिए थे। आपसी सम्बन्धों के रखरखाव, एक-दूसरे के प्रति हमदर्दी एवं अपने-पराये की कुशलक्षेम के लिए उनकी मृदुवाणी के सब कायल थे। अपनी सहधर्मिणी तथा पुत्र को खोने के पश्चात जो भी उनसे मिला, उन्होंने सुख-दु:ख ही अधिक बांटा। उन्हें शब्द रंजन परिवार की शोकांजलि।

जिंक्र को गोल्डन पीकॉक अवार्ड

हिन्दुस्तान जिंक्र को सामाजिक उत्तरदायित्व के कार्यों के लिए इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ डाइरेक्टर्स, इण्डिया द्वारा गोल्डन पीकॉक अवार्ड 2018 से सम्मानित किया गया।

यह अवार्ड महाराष्ट्र के आवासन विभाग मंत्री प्रकाश मेहता, रविन इंडस्ट्रीज के सीएमडी विजय कारला, आईओडी के अध्यक्ष लेफ्टिनेंट जेएस अहलुवालिया, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के अतिरिक्त मुख्य सचिव प्रवीण पददेशी, सीआईआरडी आदित्य बिरला समूह की चेयरपर्सन राजश्री बिरला ने जिंक्र के सीएसआर अधिकारी बुद्धिप्रकाश पुष्करणा एवं रूपल भार्गव को प्रदान किया।

उल्लेखनीय है कि जिंक्र अपने सीएसआर कार्यों के तहत् राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्र में 5 लाख से अधिक लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, महिला सशक्तिकरण एवं सामाजिक उत्थान के जरिये लाभान्वित कर रहा है।

भूलती बिसरती......

(पृष्ठ एक का शेष)

लड़के करब के सरकंडे के गिलंगे छील कर उससे बन्दूक और उसकी गोली तीर कमान बनाते हैं। अरहर की हरी लौद से गाड़ी रथ मंझोली बनाते हैं। मूंज की सिरकी से भी ये चीजें बनती हैं।

पटसन के सूखने पर छमछम बजते पटबीजों से भी तरह-तरह के बजने वाले गहने बनाए जाते हैं। बीजों को सुई से धागे में पिरो लेते हैं। गांव का कोई अलबेला किशोर किसी समय किसी अलबेली किशोरी को उपहार में दे डालता था। इन बीजों से बिछुए अनवट नइयां बनाना एकदम आसान है। एकबार तो मैंने पटबीजों का बना हथफूल भी देखा था। गहने पर इन बजते बीजों से छमछम बजती पैरों की पायल पनसुरी पैंजनी सबसे लोकप्रिय गहना है।

अरहर की री लौद से गांव के लड़के बिलैय्या डाल कर बड़ी सुन्दर कलात्मक छड़ी बनाते थे। वह इस तरह कि अरहर के तने का पूरा छिलका उतार उसी चीप में से एक मोटी चीप लहरदार ढंग से छिली लौद पर लपेट दी फिर उसे शाम को अघाने (अलाव) में लगा दिया। खाली हिस्सा धुंआरे रंग का हो जाता। चीप लिपटा हिस्सा हराकच्च रह जाता। छड़ी तैयार! सरकंडे की बरू की कलम बनाते।

कृषक के तो घर आंगन, कोठी, कुठीले, आसन, बासन, डलिया, छबरिया, बोइया, सारा कुछ घास का है। सूप पंखा और तो और बरसात से बचने का छाता खोइया! कांस भूंज की सिरकी सीकों सरकंडों से क्या-क्या नहीं बनता? मूंज की सिरकियों से बने ओटे (परदे) बड़े कलात्मक होते हैं। आड़ ओट के लिए इन्हें कहीं भी उठा कर लगाया जा सकता है। सरकंडे की ओबरी तो लोकगीतों में बहुत मशहूर है-

मां सरकंडे की ओबरी
जामें चंदन लगे/ जड़े किंकर।

ब्रज क्षेत्र में कंजर हाबुड़ा जातियों की तो बहुत से परिवारों को कांस मूंज की सिरकिया सरकंडों पर इन घासों पर बनी चीजों को बेच कर ही रोटी मिलती है। सिरकियों के बने झुनझुने सुआ (तोता) परेवा (कबूतर) सूप छींके बेचती गाती कंजरियां ब्रज के गांवों में नजर आती थीं-

लालाकूं खिलौना लेउ जी, लेउ जी
कोई कंजर भूखे जायं जी।

या फिर वे गाती थी -

लाला कूं चिरैयां लेउ, लै लेउ जी
तिहारो लाला खेलैंगे।

कभी-कभी वे गृहस्वामिनी की प्रशंसा कर सूप छीकें इत्यादि बेचने की कोशिश करतीं-

ए बौहरी (स्वामिनी) तेरे मोहं (मुख) पै तोता नाचै
दूध पूत को सूप ए लै लेउजी, लै लेउ जी..

और प्राय: वे अपनी लक्ष्य सिद्धि में सफल होती थीं। भारत के गांवों के खेतों में आज भी घास की प्रजातियों का पूरा परिवार खड़ा है। अँखुओं से फुनगी तक हम आज उन घासों के नाम और उनसे बनने वाली वस्तुओं की संरचना भूल चले हैं। कुछ चीजें तो लुप्त प्राय: हैं।

बिजली के पंखे आने से सावन के महीने में लड़की की सुसराल से सोहगी आने पर चावल, सेंमटी (सिवइयां) की झाल पर रखे जाते। सिरकी सींक और नरई के रंगीन धागों से बुने कलात्मक मोहक पंखे अब नहीं रहे। इन्हें बुनने की संरचना की जानकारी लुप्त प्राय: है। कुछ का तो नामोनिशान मिट गया है जैसे अरहर की लौद की बनी बिलैटया पड़ी छड़ियों का।

यह सत्य है कि बिजली के पंखे ए.सी में हाथ के पंखों जैसी बहुत सी वस्तुओं का उपयोग अब नहीं रहा पर क्या किसी वक्त के ग्रामीण जीवन की लोक परम्परा से जुड़ी कलात्मकता और सौन्दर्यबोध को भी नष्ट होने दिया जाये? जोड़ और झलाई के आज के इस उकठे में दूब की, घास की इस शाश्वत कला को क्या आज के जीवन में क्रीड़ा कौतुक के लिए ही सही न अपना लिया जाय? युगानुरूप रूप न दिये जाएं?

नाथ समाज में क्रिकेट प्रतियोगिता

जावद गांव में नाथ समाज की क्रिकेट प्रतियोगिता तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए जिसमें उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़ एवं भीलवाड़ा की 16 टीमों ने हिस्सा लिया। कमलेश नाथ ने बताया कि इसमें बांसवाड़ा की टीम विजयी रही। भवानी नाथ मैन ऑफ द मैच रहे। डूंगरपुर टीम के हेमेन्द्र नाथ को मैन ऑफ द सीरिज का अवार्ड दिया गया। बेस्ट बॉलर उदयपुर टीम के दिनेश नाथ रहे।

विजेता टीम को मुख्य अतिथि सलूंबर विधायक अमृतलाल मीणा ने 11 हजार एवं उपविजेता टीम को 5111 नकद एवं टॉफी प्रदान की। समारोह में इस वर्ष सरकारी सेवा में नियुक्ति पाने वाले तथा 8वीं, 10वीं एवं 12वीं में 70 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वालों का सम्मान किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में जावद गांव की प्रतिभाओं ने चूड़ी चमके रे, घूमर, पल्लो लटके सहित कई राजस्थानी गीतों पर नृत्य प्रस्तुत किए।

डिंगल-पिंगल के रसज्ञ.........

पृष्ठ तीन का शेष

(10)
कहा भयो जो बीछुरे, मो मन तो मन साथ।
उड़ी जाहु कितहू तऊ, गुडी उडायक हाथ।।
कांई हुवो धव बीछुड्या, मनड़ो मनड़ा साथ।
अठी उठी क्यूं नीं उड़े, पतंग पतंगी हाथ।।
(11)
कागद पर लिखत न बनत, कहत संदेश लजात।
कहि है सब तेरो हियो, मेरे हिय की बात।।
कागळ पै लखबो कठण, कहतां आवे लाज।
मनड़ारी सब भाखसी, मन थांरो महाराज।।
(12)
वर जीते सर मैन के, ऐसे देखे मैं न।
हरनी के नैनांन ते, हरि नीके ये नैन।।
जीत्या शायक मैंण रा, हेर्‌या नको हमेण।
हरिजी हरणा नैण सूं, नीका हरणा नैण।।
(13)
पत्ता ही तिथि पाइयत, पा घरके चहुं पास।
नित प्रति पून्यो ही रहे, आनन ओप उजास।।
पतड़ां मिलवे मत्तड़ी, उण झूंपड़ले बाट।
पूज्यूं रातड़-दीहड़े, मुखड़ा रे भर ळाट।।
(14)
नेक हंसोटी बानि ताजि, लख्यो परत मुख नीठि।
चौका चमकनि चौंधतें, परति चौंधिसी दीठि।।
बाण हंसण छोड़ो चनी, दीखे मुखड़ो नीठ।
चौकां री घण चमक सूं, मिच-मिच जावे दीठ ।।

कविरावजी के दरबारी ठाठ-ठसक तो सभी ने देखे किन्तु मैंने तो उनका अन्तिम समय भी देखा जब वे दिन-रात दारू के नशे में बने रहते। हर समय बोतल उनके सामने पड़ी रहती। खतम होने पर दूसरी आ जाती। ऐसा करते-करते वे बहुत कमजोर पड़ते गये। आंखें ऊंडी धंसती गई। शरीर बेकाबू हो गया। धीरे-धीरे बोलना-चलना भी रूक गया। पूरा शरीर एक खोखल की तरह सिमट गया और अंतत: 17 फरवरी 1964 को उनका महाप्रयाण हो गया। वे सचमुच में बड़े ठाठदार रसज्ञ जीवन जीने वाले महाकवि थे। मैंने उनमें हिन्दी साहित्य का आदिकाल अंटस पाया देखा।

मोदी के उपहारों की नीलामी

- डॉ. वेदपताप वैदिक -

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मिले उपहारों की नीलामी हो रही है। यह खबर पढ़कर मुझे अच्छा लगा। इस नीलामी से मिलनेवाला पैसा 'नमामि गंगे' परियोजना में खर्च होगा। आज हमारे देश में नेताओं का जो हाल है, वह किसी से छिपा नहीं है। वे अपने स्वार्थ के लिए किसी भी चीज़ को नीलाम कर सकते हैं। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को मिलने वाले उपहारों के बारे में कायदा यह है कि वे सरकारी तोशाखाने में जमा कर दिए जाते हैं।

मुझे कुछ राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों के बारे में व्यक्तिगत जानकारी है कि उनके घर के लोग इन उपहारों में से कई उपहार अपने पास छिपा लेते हैं लेकिन नरेंद्र मोदी अकेले ऐसे प्रधानमंत्री हैं, जिनके साथ उनके परिवार का कोई भी सदस्य नहीं रहता।

शायद वे ऐसे पहले प्रधानमंत्री हैं, जो अपने उपहारों की खुले-आम नीलामी करवा रहे हैं। यह कम खुशी की बात नहीं है कि इन उपहारों को खरीदने के लिए सैकड़ों लोग नेशनल गैलरी ऑफ मार्डन आर्ट में पहुंच रहे हैं। वे 100 रुपये मूल्य की चीज के हजार रुपये तक देने को सहर्ष तैयार हो रहे हैं, क्योंकि वे मानते हैं कि उनका यह पैसा जनता की सेवा के काम में लगेगा।

मैं तो कहता हूं कि नरेंद्र भाई को अपनी बंडियां और कुर्ते-पाजामे भी नीलामी पर लगा देने चाहिए। उनके पास तो इनके सैकड़ों जोड़े होंगे। तीन-चार महिने बाद वे किसी काम के नहीं रहेंगे। उनसे अभी तो करोड़ों रुपये प्राप्त हो जाएंगे, जिनका सदुपयोग गरीबों के लिए हो जाएगा। उनकी इस पहल से करोड़ रुपए ही नहीं, करोड़ों लोगों की दुआएं और सराहना भी उन्हें मिलेगी।

यह पहल देश के सभी नेताओं के लिए एक मिसाल बन जाएगी। राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों के पास भेंट में आई असंख्य पुस्तकों का भी ढेर लग जाता है। उनमें न तो उनकी कोई रुचि होती है और न ही उनको फुर्सत होती है कि वे उन्हें पढ़ें। क्या ही अच्छा हो कि वे सारी पुस्तकें भी वे किसी अच्छे ग्रंथालय को भेंट कर दें।

मैंने पिछले 65 साल में देश-विदेश से लाकर जमा की गई अपनी हजारों पुस्तकें हाल ही में कुछ संस्थाओं को भेंट कर दीं। इससे मुझे बड़ा संतोष मिला। अनेक दुर्लभ और कीमती ग्रंथ आगे आनेवाली पीढ़ियों के काम आएंगे। दूसरों का तो इससे लाभ होगा ही, उससे भी बड़ा अपना खुद का लाभ होगा। अपरिग्रह का आनंद मिलेगा। संसार में रहकर संन्यास के सुख की अनुभूति होगी।

पत्र-पिटारी

एक टीप 'स्मृतियों के शिखर' पर

'स्मृतियों के शिखर' के जरिए डॉ. महेन्द्र भानावत राजस्थान के लोककलाकारों, लोकगायकों, नर्तक, नर्तकियों, नायकों, लोकविधा-विद्या के लिए समर्पितों को जो पुनर्जीवन दे रहे हैं वह अभिनन्दनीय है। अपनी समृद्ध विरासत तथा सांस्कृतिक अवदान की दृष्टि से राजस्थान पूरे विश्व में शीर्ष पर है।

वर्तमान पीढ़ी पाश्चात्य नृत्यों, फूहड़ गीतों और बेढ़ब अनुरंजनों में प्रगति ढूंढ़ रही है। यदि डॉ. भानावत उस विरासत को पुनर्सृजित नहीं करते तो वह इतिहास के गुप्प अन्धेरों में सदा के लिए गुप्त-लुप्त हो जाती। ढूंढ़ने पर भी उसका पता नहीं चलता।

'स्मृतियों के शिखर' में बद्ध लोकसंस्कृति के तप:पूत साधक मौन तपस्यारत हैं। उन्होंने कभी समाज, देश तथा शासन से कुछ नहीं मांगकर अपना सर्वस्व ही दिया है। पिछली पीढ़ी के कलासाधक जाते-जाते चिर-विदाई के पहले भी दे ही रहे हैं।

बदलता समाज भावी पीढ़ी को अपने पुरातन की आंचलिक संस्कृति, कला, बोली का सौन्दर्य, लोकगीतों की ममता, वात्सल्य तथा मानवीय संवेदनाओं के मोतियों की आभा से परिचित कराने का सफल प्रयास नहीं कर रहा जिससे कला संगीत एवं गीतों की मिठास का स्नेह मद्धम होता जा रहा है फलत: उसकी बाती का प्रकाश धीरे-धीरे बुझने की ओर है। ऐसे में शहर की ही नहीं, ग्रामीण अंचलों की नई पीढ़ी भी रोटी-रोजी की तलाश में शहरों की ओर भाग ठाकरें खा रही है।

डॉ. भानावत अपने लेखन के माध्यम से राजस्थानी संस्कृति के रत्नकोश को तराश उसे आभा प्रदान करने का जो ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण कर रहे हैं, भावी पीढ़ी के कलामर्मज्ञों, संस्कृतिप्रेमियों और साहित्य-कलारसज्ञों के लिए सर्वप्रकारेण वन्दनीय और प्रणम्य है।

- डॉ. शरद पगारे, इन्दौर

भाणावत का नाम हाई रेंज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स अमेरिका में दर्ज

करेंसी मैन के नाम से मशहूर लेकसिटी के विनय भाणावत का नाम हाई रेंज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स वेस्ट ब्लूम फील्ड, मिशिगन (अमेरिका) में दर्ज किया गया है।

हाई रेंज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के निदेशक प्रदीप कुमार ने बताया कि भाणावत ने भारतीय करेंसी नोटों में मुस्लिम पवित्र अंक 786 संख्या वाले सर्वाधिक 92790 नोटों का संग्रह कर वर्ल्ड रिकॉर्ड हासिल किया है। इस उपलब्धि हेतु भारत में स्थित हैदराबाद (तेलंगाना) के कार्यालय से स्वर्ण पदक, स्मृति चिन्ह और प्रमाणपत्र प्रेषित किया गया है।

उल्लेखनीय है कि यह रिकॉर्ड विनय ने एक जैन परिवार से होते हुए तीन मुस्लिम राष्ट्र दुबई, बांग्लादेश और पाकिस्तान का रिकॉर्ड तोड़कर भारत के नाम दर्ज करवाया और दुनिया में कौमी एकता की मिसाल कायम की है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।